

अभिनव

कदम-21



Jyotish

अभिनव कदम -21



अभिनव कदम-21

का

यह अंक अर्जुन कवि की स्मृति में समर्पित

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के सहयोग से प्रकाशित

गुणाकर मुले, कमला सांकृत्यायन, प्रभाष जोशी, कुँअरपाल सिंह, उमाशंकर तिवारी, अमरनाथ श्रीवास्तव, अर्जुन कवि, हबीब तनवीर, विष्णु प्रभाकर, सुदीप बनर्जी, नईम, प्रभुनारायण विद्यार्थी, हरीश भदानी, हरिहर सिंह, श्रीनाथ मुखर्जी, कमलादास, ओमप्रकाश आदित्य, चन्द्रकिरण सोनरेक्सा, विश्वनाथ प्रसाद, मराक्षी देवी, यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र को अभिनव कदम परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

अभिनव कदम-21

प्रधान संपादक : चन्द्रदेव राय

संपादक : जयप्रकाश धूमकेतु

संपादन सहयोग : शिवकुमार पराग
संजय श्रीवास्तव
कमलेश सिंह

प्रसार व्यवस्था : श्रीमती राजेश्वरी

कला संयोजन : एस. के. दत्ता

कवर : ज्योतिष पाथेड़

(कमलेश्वर के उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' पर आधारित)

रेखांकन : स्वप्निल श्रीवास्तव

संपर्क :

'प्रकाश निकुंज'

223, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा

मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)-275101

फोन : 0547-2223113, मोबाइल : 09415246755, 09415241755

ई-मेल : patrika.abhinavkadam@gmail.co

— सहयोग राशि —

यह अंक : 50.00

संस्थाओं के लिए : 100.00

आजीवन सदस्यता : 2000.00

प्रकाशक : साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, 'मंथन' मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.)

अक्षर संयोजन : श्वेता जॉब्स, बहादुरगंज, इलाहाबाद ■ 9451451587

प्रिंटिंग : पुष्पी आफसेट, बाई का बाग, इलाहाबाद (उ.प्र.)

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

फार्म :: 4

प्रेस तथा पुस्तक पंजीयन अधिनियम के अन्तर्गत 'अभिनव कदम' नामक पत्रिका से संबंधित स्वामित्व और अन्य बातों का विवरण—

1. प्रकाशन : 223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड,
निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ
2. प्रकाशन की आवृत्ति : अर्द्धवार्षिक
3. मुद्रक का नाम : जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं? : हाँ
पता : 223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड,
निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ
4. प्रकाशक का नाम : जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं? : हाँ
पता : 223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड,
निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ
5. संपादक का नाम : जयप्रकाश धूमकेतु
क्या भारतीय हैं? : हाँ
पता : 223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड,
निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ
6. उन व्यक्तियों के नाम
व पते जो पत्रिका के
मालिक और कुल पूंजी
के एक-एक प्रतिशत से
अधिक के हिस्सेदार
या भागीदार हैं : साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, 'मंथन'
223, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड,
निज़ामुद्दीनपुरा, मऊ

मैं जय प्रकाश धूमकेतु एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सही हैं।

—जय प्रकाश धूमकेतु

अनुक्रम

1. संपादकीय / 7

कविताएँ

2. विसेसर—केशव तिवारी / 12
3. जल जलहिं समाना—रामप्रकाश कुशवाहा / 16
4. औरत होने का पुरस्कार—भरत प्रसाद / 23
5. एक सुन्दर लड़की चाहती है—वेद प्रकाश / 26
6. मिलते बिछुड़ते हुए—आफताब / 29

लेख

7. वैश्वीकरण के दौर में आर्थिक मंदी और समाजवाद—आर. डी. आनन्द / 34
8. अडोर्नो का राजनीतिक सौन्दर्यशास्त्र—टेरी ईगल्टन, अनुवाद : रामकीर्ति शुक्ल / 42
9. धर्म निरपेक्षता में धर्म—सुरेश पण्डित / 68
10. वेणुगोपाल : हमदम भी रकीब भी—रोहिताश्व / 74
11. विष्णु प्रभाकर और उनका उपन्यास अर्धनारीश्वर—रामनिहाल गुंजन / 88
12. आदिबोध की परम्परा में दादू की जगह—सुभाष राय / 92
13. बसन्त सेना और माटी की गाड़ी—ब्रह्मदेव शुक्ल / 102
14. समकालीन हिन्दी कविता में भारतीयता—जितेन्द्र श्रीवास्तव / 107
15. वडभागी शम्भु गुप्त—संजय राय / 115
16. समकालीन परिदृश्य और जीवन का सृजनशील आलोचनात्मक आख्यान—शंभु गुप्त / 118
17. मोहन राकेश की कहानियों का शिल्प विधान—मूलचन्द कनौजिया / 151
18. भोजपुरी भाषा और भोजपुरी समाज : विश्वबन्धुत्व का सच्चा वाहक—डा. सी.पी. राय / 156

उपन्यास अंश

19. घर का आखिरी कमरा—प्रियदर्शन मालवीय / 161
20. हम कैसे लिखते हैं—अलेक्सेई टालस्टाय, अनुवाद : गुलाबचन्द विश्वकर्मा / 246

कहानियाँ

21. रमा चंचल हो गई है—सुभाषचन्द्र कुशवाहा / 249
22. बर्फ में आग—शमोएल अहमद / 258

23. जब रात में सुबह होती है—राजेश झरपुरे / 262
 24. सबसे बड़ा कैदी—शिशुपाल / 273

कविताएँ

25. देवेन्द्र आर्य की पाँच कविताएँ / 277
 26. रंजना जायसवाल की तीन कविताएँ / 281
 27. शैलेय की तीन कविताएँ / 284
 28. रामचन्द्र सरस की दो कविताएँ / 287
 29. मोतीराम यादव की दो कविताएँ / 290

समीक्षा

30. उदास टहनियों के हरे पत्ते सौपते हुए—रमाकान्त शर्मा / 292
 31. बगदाद को बचा ले जाने की कोशिश—अनिल राय / 296
 32. 'अर्न्तवस्तु का सौन्दर्य' की अपर्याप्त चर्चा—श्रीप्रकाश मिश्र / 303
 33. बेघर हुए अलाव—भवदेव पाण्डेय / 309
 34. लो नया गीत है आता—जयप्रकाश धूमकेतु / 313
 35. मौन बेबस बासुरी कोने लगी—जयप्रकाश धूमकेतु / 316

रपट

36. लहरों की लय का लोकार्पण—सुनीता ठाकुर / 319
 37. जनकवि केदारनाथ अग्रवाल के गाँव कमासिन में सृजनधर्मियों का पड़ाव
 —चन्द्रपाल कश्यप / 322
 38. भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में अम्बेडकर के बिना मार्क्स प्रासंगिक नहीं
 —मूलचन्द सोनकर / 324
 39. रचनाकारों के सम्पर्क सूत्र / 327

‘वह सुबह कभी भी आयेगी’

पं. बंगाल के लालगढ़, झारग्राम, शालबनी या छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्य प्रदेश के शोषित आदिवासी और किसान जल-जंगल-जमीन से बेदखल किये जाने, पुलिसिया उत्पीड़न, जमींदारों, कोटेदारों, ठीकेदारों की लूट के विरुद्ध संघर्षरत हैं जिसे राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार द्वारा नक्सलवाद कह कर प्रचारित किया जा रहा है और इस असंतोष और संघर्ष के सफाये के लिये देश के प्रधानमंत्री और गृहमन्त्री योजनाएँ बनाने में जुटे हैं क्योंकि उनकी नज़र में नक्सलवाद देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन चुका है। लेकिन इन्हें देश को खोखला करने वाले, कालेधन की मीनार खड़ी करने वाले जमाखोर, मिलावट करने वाले और मासूम जिन्दगियों के साथ खेलने वाले ड्रग तस्कर दिखाई नहीं देते। समस्या यह रही है कि देश की लोकतान्त्रिक प्रक्रिया में विश्वास करने वाले बामदल भी नक्सलवाद के मूल कारणों की तह में जाने से लगातार बचते रहे हैं। और नहीं तो सिंगूर और नन्दीग्राम में किसानों के जनयुद्ध के विरुद्ध उनका वास्तविक चेहरा भी अब सामने आ गया है। इन परिस्थितियों में थोड़ा हट कर गम्भीरतापूर्वक नक्सलवाद की बढ़ती क्रियाशीलता के वस्तुगत कारणों की पड़ताल जरूरी है। आदिवासी समस्याओं से वर्षों से संघर्षरत और उनके संघर्ष को स्वर देने वाली प्रख्यात लेखिका महाश्वेता देवी ने लिखा है—“आजादी के बासठ वर्ष बाद कुछ भी हासिल न होने के कारण आदिवासी गुस्से में हैं। मैं पूछती हूँ, काँटपहाड़ी-बाँसपहाड़ी में बिजली आज तक क्यों नहीं पहुँची? मुझे लगता है, जितने तरह के आतंक हैं, उसमें सबसे बड़ा आतंक राजकीय आतंक होता है?” इसका दृश्यफलक 1967 से लेकर आज तक हमारे सामने है। आदिवासियों के असंतोष के दमन के लिए छत्तीसगढ़ की रमन सरकार और सलवा जुडूम ने अमानवीय कार्यवाही की और प्रगतिशील सोच के लोग चुप्पी साधे रहे। और नहीं तो उनके शासन द्वारा रायपुर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की दर्शक दिर्घा में बैठ कर अपने को गौरवान्वित महसूस करते रहे। डॉ. विनायक सेन को नक्सली करार देकर दो वर्षों तक कैदी बना कर रखा गया। उच्चतम न्यायालय ने इस कार्यवाही को अवैध करार देकर उन्हें जमानत दी और सलवा जुडूम को गलत सिद्ध किया।

वास्तविकता तो यह है कि आम जनता का भरोसा राज्य सत्ता से उठता जा रहा है। अब उन्हें न्याय नहीं मिलने वाला है जैसी मनोवृत्ति विस्तार लेती जा रही है। आज मँहगाई, बेरोजगारी, असुरक्षा, शोषण, उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, बड़े पैमाने पर मिलावट की चिन्ता नहीं है राज सुख भोग रहे राजनेताओं के मन में। यही केन्द्रीय बिन्दु है जहाँ समाज के पीड़ित वर्ग को अपनी ओर आकर्षित करने लगते हैं नक्सली। उनके मन में उम्मीद जगने लगती है। उन्हें

समय की अँधेरी सुरंगों से निकलने का—रास्ता सूझने लगता है। वह अपने हिस्से की रोशनी और आसमान पा लेना चाहते हैं। उनके भीतर की जीजिविषा जाग उठती है और उनके भीतर से तराने के स्वर फूटने लगते हैं—‘वह सुबह कभी तो आयेगी।’

दूसरी तरफ राज्यसत्ता आर्थिक सुधारों और जनविरोधी नीतियों को वैधानिक रूप देने, उन्हें संरक्षित-संबर्धित करने में पूरी ताकत के साथ जुटी हुई है। ‘मत्स्य न्याय की सैद्धान्तिकी’ पुष्पित-पल्लवित हो रही है जिसके चलते नक्सली गतिविधियाँ लगातार विस्तार पा रही हैं। अलग-अलग राज्यों में सत्ता भले ही अलग-अलग दलों की हो परन्तु शासन-प्रशासन का चरित्र कमोवेश एक जैसा है। स्वभावतः सभी नक्सली समस्या से समान रूप से प्रभावित हैं। प. बंगाल में विगत 32 वर्षों से बामदल सत्ता चला रहे हैं। लोकतान्त्रिक प्रक्रिया के भीतर रहते हुए समाजवादी समाज बनाने, मार्क्सवाद लाने का सपना सजोये बैठी इस देश की बामपंथी शक्तियों की बुनियाद जनपक्षधरता रही है। जनसंघर्ष से उनके जीवन का अटूट रिस्ता रहा है। परन्तु राजनीतिक धरातल पर इन बामपंथियों का सैद्धान्तिक विचलन हुआ है, उनके भीतर की आग और राग का स्वर गुमशुदगी का शिकार हुआ। सिंगुर, नन्दीग्राम, लालगढ़ प. बंगाल का ही तो हिस्सा है। आखिर बामपंथियों के गढ़ में अतिवादी बामपंथियों से चुनौती क्यों मिल रही है? बहुत दिनों तक वास्तविकता से मुँह नहीं चुराया जा सकता। समाजवाद के रास्ते से विचलन और पूँजीवाद की फिसलन से अपने को नहीं बचा सकी प. बंगाल की सरकार। इन्हीं प्रश्नों से टकराते हुए जन कवि शिवकुमार पराग कहते हैं—“जो अंगद के पावों वाले थे चिकनाई पर फिसल गये जाने कैसे बदल गये।” इस विचलन और फिसलन का आभास गोरख पाण्डेय को बहुत पहले हो गया था ‘समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई’।

अभी हाल ही में मंशा देवी ने अपने एक वैचारिक लेख में कहा है कि “सच्ची बात यह है कि नक्सलवाद दो राजनीतिक व्यवस्थाओं के बीच का युद्ध है। नक्सली समाजवादी व्यवस्था कायम करना चाहते हैं, जब कि सामन्ती पूँजीवादी ढाँचे को बनाये रखना चाहते हैं। यह सही है कि सरकार के पास ज्यादा हथियार हैं और नक्सलियों के पास कम, पर सवाल पैदा होता है कि जनता क्या चाहती है। और इस आर-पार की लड़ाई में जीत उसी की होगी जिसके साथ जनता है।”

आखिर बात क्या है कि प. बंगाल में जल-जंगल-जमीन के बुनियादी सवाल को जनता का सवाल बनाने वाले, भूमिसुधार की अलख जगाने वाले, तेभागा आन्दोलन की बुनियाद पर 32 वर्षों से सत्ता की बागडोर सँभालने वाले पं. बंगाल के कम्युनिस्टों की संघर्षशील चेतना कहाँ गुम हो गई। कृषि बनाम उद्योग के सवाल पर सिंगूर और नन्दीग्राम के किसानों की उपजाऊ कृषि भूमि का किसानों को विश्वास में लिए बगैर अधिग्रहण और उसके परिणामस्वरूप उठने वाले जनसंघर्ष का ही परिणाम निकला कि वहाँ की सरकार को अपना जनविरोधी निर्णय वापस लेना पड़ा। शासन की दमनात्मक कार्यवाही भी आन्दोलनकारियों को नहीं रोक पाई। चल रहे जन संघर्ष के पक्ष में अपने मुखर हस्तक्षेप के कारण ममता बनर्जी

जन संघर्षों का प्रतीक बन गई। सिंगूर और नन्दीग्राम की तरह पुलिस उत्पीड़न के विरुद्ध लालगढ़ की आदिवासी जनता ने जनसंघर्ष की शुरुआत की, जिसके विरुद्ध राज्य सरकार को केन्द्र सरकार से मदद लेनी पड़ी। पन्द्रहवीं लोक सभा के चुनाव में प. बंगाल की जनता ने अपने गुस्से का परिचय मत पत्रों के माध्यम से दिया है।

वामपंथियों के भीतर इस समय बहस चल रही है। अपने सैद्धान्तिक और वैचारिक पराभव से छुटकारा पाने और होने वाले अगले विधानसभा के चुनाव में उतरने की रणनीति पर गहन मन्त्रणा चल रही है। चुनाव के बाद यदि बाममोर्चा को पुनः सत्ता में आने का मौका वहाँ की जनता देती है तो निश्चित तौर पर यह एक आश्चर्यजनक घटना होगी।

यदि हम थोड़ा पीछे मुड़ कर देखें तो आज नक्सलवाद के विस्तार पाते जाने के कारणों को और साफ-साफ देख सकते हैं। 1970 में जे. पी. मुजप्फरपुर के नक्सल प्रभावित मुसहरी प्रखण्ड से चल कर पूरे डेढ़ साल तक बिहार के गाँव-गाँव, घर-घर जाकर भारत के गाँवों की गरीबी, अशिक्षा, अन्याय और शोषण से रू-ब-रू हुए और अपनी उस यात्रा के अनुभव को 'फेस टु फेस' शीर्षक से लिखे। निबन्ध के माध्यम से कलमबन्द करते हुए उन्होंने लिखा कि—“कानून व्यवस्था बनाये रखने का काम केवल सरकार का होना चाहिए। नागरिकों के जीवन और सम्पत्ति की रक्षा करने का अधिकार और कर्तव्य उसी का है। परन्तु नक्सलवाद पहले एक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक समस्या है। चाहे जितनी गिरफ्तारियाँ हो, गोलियाँ चले नक्सली हिंसा या अन्य प्रकार की क्रान्तिकारी हिंसा तब तक दबाई नहीं जा सकती जब तक कि जड़ से रोग दूर करने का उपाय भी साथ-साथ न चले। राज्य की हिंसा द्वारा हिंसा में विश्वास करने वाले समूहों को समाप्त करने की जितनी भी कोशिशें की जायेगी, उनके खून की बूँदें धरती पर गिर कर रक्तबीज की तरह बार-बार नया जन्म लेगी और फैलती रहेंगी।” जे. पी. की सोच समाजवादी थी क्रियाशील नहीं। उनकी सन्दर्भित दृष्टि अनुभव आधारित है न कि वैचारिक। वे वैचारिक अनुशीलन के सजग अध्येता थे और सघन संवेदना उनके व्यक्तित्व की पहचान थी। आचार्य नरेन्द्र देव की वैचारिक यात्रा के यात्री के रूप में उनकी राजनीतिक पहचान थी। इन्दिरागांधी की सत्ता के विरुद्ध 'सम्पूर्ण क्रान्ति' का नारा देकर पूरे देश की जनता को जनान्दोलन की राह पर अग्रसर कर उनकी अगुआई की। अन्ततः कांग्रेस को सत्ताच्युत होना पड़ा। इन्दिरा गांधी का आपात काल और दमन की कार्यवाही का जवाब उस समय जनता ने उन्हें दे दिया।

जे. पी. के निबन्ध 'फेस टु फेस' की 1970 के दशक में देश-विदेश में खूब चर्चा हुई। उस निबन्ध को पढ़ कर इन्दिरा गांधी ने उनको एक पत्र लिखा था—“आप का प्रयोग बुनियादी परिवर्तन के लिए अहिंसक संभावनाओं को प्रकट करने का महत्वपूर्ण प्रयास है। मैंने भी इस बात पर जोर दिया है कि नक्सलवाद को प्रतिहिंसा से नहीं दबाया जा सकता, दरिद्रता और शोषण के खिलाफ एक जिहाद से ही इसको रोका जा सकता है। राजनीतिक अतिवाद के पीछे दरिद्रता और शोषण है।” इन्दिरा गांधी का यह वक्तव्य शासक वर्ग का वक्तव्य है। शासक वर्ग हमेशा क्रियाशीलता को कुण्ठित करने का काम करता है। रघुवीर

सहाय ने 1970 के दशक में शासक वर्ग के इस चरित्र को केन्द्र में रख कर एक कविता लिखी—जिसका एक अंश द्रष्टव्य है—“निर्धन जनता का शोषण है/कहकर आप हँसे/लोकतन्त्र का अन्तिम छण है/कह कर आप हँसे/कितना आप अकेले होंगे/मैं सोचने लगा/सहसा मुझे अकेला पा कर/फिर से आप हँसे।” उसी दौर में प. बंगाल के मुख्यमन्त्री सिद्धार्थ शंकर रे ने पं. बंगाल के नक्सली आन्दोलन को जो किसान आन्दोलन के रूप में उभड़ा था, अपनी दमनात्मक कार्यवाही से कुचला था। इन्दिरा गांधी चाहती तो उस दमन की कार्यवाही को रोक कर किसानों के सवालों का हल ढूँढ़ सकती थीं। इन्दिरा गांधी द्वारा जे. पी. को लिखा गया भावनात्मक पत्र एक प्रशासक की कूटनीतिक अभिव्यक्ति थी। सत्ता पक्ष हमेशा अपने समय की स्थितियों-परिस्थितियों का आकलन करते हुए अपने को जनता के बीच प्रस्तुत करता है। वह कुछ ऐसे निर्णायक कदम भी उठाता है ताकि आम जनता के बीच उसकी लोकप्रियता बढ़ती हुई नज़र आये। 1972 में बैंकों का राष्ट्रीकरण और राजाओं के प्रिवीपर्स की समाप्ति जैसा साहसिक निर्णय जो उस समय इन्दिरा गांधी द्वारा लिया गया था हो सकता है कि वह जे. पी. के ‘फेस टू फेस’ निबन्ध के पढ़ने के बाद उनका जनता के पक्ष में लिया गया निर्णय रहा हो।

1970 के दौर में जे. पी. और इन्दिरा गांधी का नक्सलवाद के प्रति नजरिया और आज के दौर में प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री के नजरिये में बड़ा फर्क है। इसे 1990 के बाद के विश्वग्राम की पश्चिमी दुनिया की संकल्पना की स्थापना से जोड़ कर देखा जाना चाहिए जिसकी कोख से आर्थिक सुधार, मुक्त बाजार जैसे बहुत से जनविरोधी प्रयोग उभड़ कर सामने आ चुके हैं। बदलते राष्ट्रीय परिदृश्य में तेलुगू के जनकवि बरबरा राव जिन्हें नक्सलियों का समर्थक बताया जाता है। एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा—“हम फिनिक्स पक्षी की तरह अपनी राख से फिर जिन्दा हो जायेंगे।” बरबरा राव का यह वक्तव्य एक सैद्धान्तिक क्रान्ति के योद्धा का वक्तव्य है।

यदि जे. पी. के ‘फेस टू फेस’ का सन्दर्भित अंश, इन्दिरा जी के पत्र का सन्दर्भित अंश और आज के दौर में लगातार घट रही घटनाओं और उस पर नियन्त्रण पाने के लिए शासक वर्ग की कृत कार्यवाही और बरबरा राव के सन्दर्भित विचार को एक साथ जोड़ते हुए देखें तो एक बात सामने उभड़ कर आती है कि सत्ता प्रतिष्ठान के नक्सलियों के सफाये के अभियान से तात्कालिक सफलता तो मिल सकती है परन्तु यह अभियान नक्सली समस्या का सही निदान नहीं हो सकता। फिनिक्स पक्षी बार-बार अपनी राख से पैदा होते रहेंगे जब तक कि दरिद्रता और शोषण के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर एक संकल्पबद्ध महाअभियान नहीं चलाया जाता।

अभिनव कदम के पिछले अंक में प्रियदर्शन मालवीय का पहला उपन्यास ‘घर का आखिरी कमरा’ का प्रथम खण्ड ‘एक मनहूस दिन’ प्रकाशित किया गया था। इस अंक में उपन्यास का दूसरा व तीसरा खण्ड प्रकाशित किया जा रहा है। वैश्वीकरण और आर्थिक मन्दी पर आर.डी. आनन्द का लेख समाजवादी दृष्टि से किया गया महत्वपूर्ण आकलन है।